विवेक दत्त पाण्डेय

प्रदूषित जल की बढ़ती समस्या

जल जनित रोग वायरस और बैक्टीरिया जैसे सूक्ष्मजीवों के कारण होते हैं। इसके कारण होने वाले विकार सबसे आम बीमारियों में से एक हैं। भारत के योजना आयोग के अनुसार, देश की 85% जनसंख्या जल के बुनियादी ढांचे से घिरी हुई है। विभिन्न सरकारी योजनाओं पर अरबों रुपये खर्च किए जाते हैं, फिर भी लगभग 3.77 करोड़ लोग प्रदूषित पेयजल के उपयोग के कारण हर साल बीमार पड़ते हैं। इसका कार्य दिवसों के साथ-साथ अर्थव्यवस्था पर भी कुप्रभाव पड़ रहा है।

जल प्रदूषण भारत की जल सम्बन्धी प्रमुख समस्याओं में से एक है। इसका सबसे बड़ा स्रोत अनुपचारित सीवेज का जल है। स्थिति इतनी गंभीर है कि भारत में ऐसा कोई जल स्रोत नहीं बचा है जिसका जल पूर्णतः शुद्ध हो। जल धरती पर उपलब्ध सबसे आवश्यक संसाधनों में से एक है। देश की जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है जिसके कारण सभी को शुद्ध जल उपलब्ध करा पाना मुश्किल हो रहा है और जल से होने वाली बीमारियाँ भी बढ़ रही हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि दुनिया भर में 80% बीमारियाँ प्रदूषित जल के कारण होती हैं, जिनमें अतिसार (डायरिया) सबसे प्रमुख है। हाल ही में गाजियाबाद की एक आवासीय समिति में प्रदूषित पेयजल के उपयोग से सात सौ से अधिक लोग अतिसार से ग्रस्त हो गए। दूसरी ओर आज भी बड़े शहरों और गांवों में लोग प्रदूषित जल से नहाने को विवश हैं। इसके कारण चर्म रोग बढ़ रहे हैं। स्थिति यह है कि लगभग हर घर में आपको चर्म रोग के मरीज मिल जाएंगे। बड़े शहरों में पेयजल का एकमात्र स्रोत या तो बोतलबंद पानी है या फिर जलशोधक संयंत्र (RO)। आज देश के दूसरे भागों में भी जल की स्थिति लगभग ऐसी ही है। गांवों में लोग हैंडपंप के गंदे पानी से परेशान हैं, कई जगहों पर नलों से बदबूदार पानी आता है तो कहीं सूखा पड़ा है। जरा सोचिए, अगर भीषण गर्मी में शुद्ध पेयजल न मिले या शुद्ध पेयजल प्रदूषित हो जाए तो बीमारियों का तो एक नया दौर शुरू हो जाएगा। फिर इस पर काबू पाना मुश्किल हो जाएगा।

प्रदूषित जल से होने वाली बीमारियाँ

जल जनित रोग वायरस और बैक्टीरिया जैसे सूक्ष्मजीवों के कारण होते हैं। इसके कारण होने वाले विकार सबसे आम बीमारियों में से एक हैं। भारत के योजना आयोग के अनुसार, देश की 85% जनसंख्या जल के बुनियादी ढांचे से घिरी हुई है। विभिन्न सरकारी योजनाओं पर अरबों रुपये खर्च किए जाते हैं, फिर भी लगभग 3.77 करोड़ लोग प्रदूषित पेयजल के उपयोग के कारण हर साल बीमार पड़ते हैं। इसका कार्य दिवसों के साथ-साथ अर्थव्यवस्था पर भी कुप्रभाव पड़ रहा है। अनुमान है कि पेयजल के कारण लोगों के बीमार पड़ने से प्रति वर्ष न केवल 7.3 करोड़ कार्य दिवस व्यर्थ हो जाते हैं, वरन् लगभग 39 अरब रुपये का आर्थिक नुकसान भी होता है।

केंद्र सरकार की 'हर घर जल' योजना हर गांव में हर घर तक पाइप बिछाने में सफल रही, लेकिन आज भी इन पाइपों में आने वाले जल का 75% भाग भूजल है जो धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। गौरतलब है कि ग्रामीण भारत की 85% आबादी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भूजल पर निर्भर है। एक तरफ भूजल का स्तर लगातार नीचे गिरता जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ अगर यह प्रदूषित हो जाता है तो यह बहुत बड़े खतरे का संकेत है। इसका समाधान भी

बहुत मुश्किल है।

आज देश के करीब 6.6 करोड़ लोग जल में अत्यधिक फ्लोराइड के घातक परिणामों का सामना कर रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप या तो उनके दांत खराब हो रहे हैं या फिर उनके हाथ-पैर

प्लास्टिक कचरे से जल प्रदूषण

विकृत हो रहे हैं। यहां तक कि बच्चे भी इससे अछूते नहीं हैं। वहीं करीब एक करोड़ लोग जल में अत्यधिक आर्सेनिक के शिकार हैं। कई जगहों पर जल में लोहे की मात्रा बढ़ गई है। यह जल प्रदूषण की समस्या का एक प्रमुख कारण है।

भारत सरकार के सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय की राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण की 76वीं रिपोर्ट के अनुसार देश में 82 करोड़ लोगों को आवश्यकतानुसार जल नहीं मिल रहा है। सिर्फ 21.4% लोगों के घर में सुरक्षित जल उपलब्ध है। दुखद बात यह है कि नदियां और तालाब जैसे 70% जल संसाधन अत्यधिक प्रदूषित हो चुके हैं। करीब 78% ग्रामीण और 59% शहरी घरों में स्वच्छ जल उपलब्ध नहीं है। आज भी देश में करीब 19 हजार गांव ऐसे हैं, जहां स्वच्छ पेयजल का कोई नियमित स्रोत उपलब्ध नहीं है। हाल के वर्षों में विकासशील देशों में जल जनित बीमारियां एक बड़ी चुनौती बनकर उभरी हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन और संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष (UNICEF) के एक अनुमान के अनुसार अकेले भारत में हर दिन 3,000 से ज्यादा लोग प्रदूषित जल से होने वाली बीमारियों का शिकार हो रहे हैं।

बोतलबंद जल की शुद्धता पर उठे सवाल

जल जनित बीमारियों के कई अलग-अलग कारण हैं, जिन्हें आमतौर पर दो वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है। पहला प्रदूषित जल और दूसरा इसके

धार्मिक गतिविधियों के कारण नदियों में बढ़ता जल प्रदूषण

संपर्क में आना। लोग अक्सर सोचते हैं कि बोतलबंद जल पूर्णतः शुद्ध होता है, यह गलत है। कई कंपनियां शुद्धता की गारंटी देती हैं, लेकिन वास्तविकता कुछ और ही है। प्रदूषित जल बीमारियों का मुख्य कारण है। इससे होने वाली बीमारियाँ आपकी यात्रा को अप्रिय बना सकती हैं। दूषित या गंदा जल पीने से दस्त, उल्टी और पेट दर्द जैसी बीमारियाँ हो सकती हैं। यात्रा करते समय, यह ज़रूर जान लें कि आपका पानी कहाँ से आता है। प्रदूषित जल साफ दिख सकता है लेकिन फिर भी उसमें हानिकारक बैक्टीरिया, वायरस और परजीवी हो सकते हैं। बोतलबंद जल यात्रियों के लिए सबसे सुरक्षित विकल्प है। हालाँकि, कुछ बोतलबंद जल खतरनाक हो सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि जल कहाँ से आता है और उसका उपचार कैसे किया जाता है।

अगर आप यात्रा पर हैं, तो पीने के लिए प्राकृतिक झरने का जल साथ लाने की कोशिश करें। ऐसा इसलिए है क्योंकि झरने का जल शरीर और मस्तिष्क को अतिआवश्यक ऑक्सीजन प्रदान करता है, पाचन में सहायता करता है, स्वस्थ वजन बनाए रखने में मदद करता है और मीठा भी होता है। झरने का जल कभी भी फीका या उबला हुआ नहीं लगता। इसे पीने से शरीर को कई लाभ होते हैं। भारत में जल प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण शहरीकरण और उसकी अनियंत्रित दर है। पिछले दशक में शहरीकरण की दर बहुत तेजी से बढ़ी है। इससे कई दीर्घकालिक पर्यावरणीय समस्याएं पैदा हुई हैं।

पांच मूल तत्वों में से एक जल हमारे जीवन का आधार है। जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए कवि रहीम ने कहा है- ''रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। पानी गये न ऊबरे, मोती मानुष चून।'' अगर जल न होता तो संसार की रचना संभव न होती। यही कारण है कि यह जीवन के लिए एक अमूल्य प्राकृतिक संसाधन है। जल के महत्व को इस बात से समझा जा सकता है कि महान प्राचीन सभ्यताएं नदियों के किनारे ही विकसित हुई हैं और अधिकांश प्राचीन शहर नदियों के किनारे ही बसे हैं।

क्यों है भारत जल संकट में

आबादी के लिहाज से विश्व का सबसे बड़ा देश भारत आज जल संकट से जूझ रहा है। यहां जल संकट की समस्या गंभीर हो गई है। शहरी इलाकों में ही नहीं बल्कि ग्रामीण इलाकों में भी जल संकट बढ़ गया है। इस समय करीब 20 करोड़ भारतीयों को शुद्ध पेयजल की सुविधा नहीं मिल पा रही है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, तमिलनाडु और केरल जैसे राज्यों में जहां जल की अत्यधिक कमी हो गई है, वहीं राज्यों के मध्य जल को लेकर विवाद परस्पर गहरा गए हैं। भूजल के अत्यधिक दोहन से धरती की

कोख सूख रही है। जहां मीठे जल का प्रतिशत कम हुआ है, वहीं जल में खारापन बढ़ने से भी समस्या गंभीर हो गई है।

भारत में जनसंख्या विस्फोट ने जहां कई समस्याएं पैदा की हैं, वहीं जल की कमी को भी बढ़ाया है। इस समय देश की आबादी में 1.5 करोड़/वर्ष की दर से बढ़ोत्तरी हो रही है। ऐसे में वर्ष 2050 तक भारत की आबादी 150 से 180 करोड़ के मध्य पहुंचने की संभावना है। ऐसे में समझा जा सकता है कि जल की उपलब्धता सुनिश्चित करना कितना मुश्किल होगा। आंकड़े बताते हैं कि आजादी के बाद से अब तक प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता में 60% की कमी आई है। इसका मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि है।

नदियों की स्थिति सुधारने की आवश्यकता

नदियों को मानव सभ्यता के लिए वरदान माना जाता है। क्योंकि अगर धरती पर नदियाँ न होती तो जीवन भी नहीं होता। भारत में नदियों को प्राचीन काल से ही बहुत सम्मान दिया जाता रहा है। चाहे गंगा हो या सरस्वती, यमुना हो या अन्य नदियां, हमारी भारतीय संस्कृति में नदियों को मां कहा जाता है। अगर धरती हमारी मां है तो नदियां इस धरती मां की नसें हैं और अगर धरती पर नदियां सुरक्षित हैं तो ही जीवन सुरक्षित है।

जीवनदायिनी नदियां न केवल जलमार्ग हैं वरन् वर्षा जल को बचाकर धरती की नमी भी बनाए रखती हैं। लेकिन आज वे भी प्रदूषित हो गई हैं। कॉरपोरेट टेक्सटाइल ने नदियों को बड़े पैमाने पर प्रदूषित करने में अपना योगदान दिया है। अवैध खनन ने भी कई जगहों पर नदियों की तस्वीर बिगाड़ दी है। यद्यपि, प्रदूषित जल और उद्योगों से निकलने वाले जहरीले पदार्थों के शोधन के लिए लगभग सभी देशों में कानून बनाए गए हैं। लेकिन इन कानूनों का सख्ती से पालन न होने के कारण नदियों को प्रदूषित होने से बचाना मुश्किल हो गया है। नियम-कानूनों की अनदेखी और नदी पुनर्जीवन की योजनाएं फाइलों तक ही सीमित रहने के कारण कई स्थानों पर नदियों का जल स्पर्श करने योग्य भी नहीं बचा है, तो कहीं-कहीं नदियां गंदे नालों में तब्दील होती नजर आ रही हैं, यही कारण है कि नदियों के संरक्षण को लेकर अब दुनिया भर में वैश्विक प्रयास हो रहे हैं।

कुछ समय पहले इंग्लैंड के यॉर्क विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने नदियों में इंसानों द्वारा उपयोग की जाने वाली रासायनिक दवाइयों, कीटनाशकों आदि से होने वाले प्रदूषण का पता लगाने के लिए दुनियाभर के 104 देशों की 258 नदियों पर व्यापक शोध किया। 86 संस्थानों के 127 वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध में अन्य देशों के अलावा भारत की नदियों में भी नशीली दवाओं से जुड़े तत्वों का स्तर काफी अधिक पाया गया। अमेरिका की राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी द्वारा प्रकाशित इस शोध रिपोर्ट के अनुसार पैरासिटामोल, निकोटीन, कैफीन के अलावा मिर्गी, मधुमेह आदि की दवाएं नदियों के जल के लिए खतरा बन रही हैं। नदी किनारे रहने वाले लोग इनका जहरीला जल पीने की मजबूरी के कारण कैंसर व अन्य गंभीर बीमारियों का शिकार हो रहे हैं।

प्लास्टिक कचराः प्रदूषण का एक प्रमुख स्रोत

प्लास्टिक कचरा, नदी प्रदूषण का एक बड़ा कारण बनता जा रहा है। समुद्र में प्लास्टिक समाहित करने वाली नदियों में चीन की यांग्त्ज़ी नदी प्रमुख है, जिसके द्वारा प्रतिवर्ष 3.33 लाख टन प्लास्टिक समुद्रों में पहुंचता है। दूसरे नंबर पर हमारी गंगा नदी है, जिसके द्वारा 1.15 लाख टन प्लास्टिक समुद्रों में समाहित होता है। करीब 4 साल पहले नेशनल जियोग्राफिक चैनल के सौजन्य से 18 महिला वैज्ञानिकों की एक टीम ने गंगा नदी के आरंभ से लेकर अंत तक की यात्रा की और गंगा नदी में प्लास्टिक प्रदूषण के स्तर का विस्तृत अध्ययन किया। इसमें पाया गया कि भारत की सबसे बड़ी नदी गंगा सर्वाधिक पूज्यनीय होने के साथ-साथ अधिक प्रदूषित भी हो गई है। गंगा नदी दुनिया की उन 10 नदियों में शामिल है, जिनके द्वारा समुद्रों में कुल प्लास्टिक का 90% भाग समाहित होता है। यद्यपि, कुछ समय पूर्व यह पाया गया था कि बिहार और उत्तराखंड राज्यों में गंगा नदी में प्रदूषण का स्तर कुछ कम हुआ है।

जैव रासायनिक आक्सीजन मांग (BOD) जल की गुणवत्ता तय करने का एक मुख्य प्राचल है। जिसका अर्थ जैविक जीवों द्वारा ऑक्सीजन का उपयोग है। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के महानिदेशक जी अशोक कुमार के अनुसार 2021 में गंगा जल की गुणवत्ता की वर्ष 2015 से तुलना करने पर उत्तराखंड के हरिद्वार से सुल्तानपुर तक और बिहार के बक्सर से भागलपुर तक गंगा जल में (BOD) का स्तर तीन मिलीग्राम/लीटर था, जो प्रदूषण रहित जल की श्रेणी में आता है। इसी तरह उत्तर प्रदेश के कन्नौज से वाराणसी और पश्चिम बंगाल के त्रिवेणी से डायमंड हार्बर के मध्य प्रदूषण का स्तर 1.3 से 4.3 मिलीग्राम/लीटर था। न्यूनतम श्रेणी में 3 से 6 मिलीग्राम/लीटर (BOD) का स्तर होता है। यहां कम मान का मतलब जल की बेहतर गुणवत्ता है, जबकि अगर (BOD) का स्तर 6 मिलीग्राम/लीटर से अधिक है, तो जल को प्रदूषित माना जाता है, जिसके बाद उपचारात्मक कार्रवाई की आवश्यकता होती है। बहरहाल, तमाम प्रयासों के बावजूद गंगा की स्थिति अभी भी कई स्थानों पर दयनीय है और जिस तरह से देशभर में

जल की लगातार आपूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि जमीनी स्तर पर जल प्रबंधन को लेकर वास्तविक कार्य हो, लेकिन भारत में अलग-अलग संस्थाओं के बीच समन्वय की कमी से इस क्षेत्र में कार्य करने में बहुत समस्याएं आती हैं। भारत में जिस तरह जल संकट बढ़ रहा है उसका समाधान ढूंढने के लिए राज्य सरकारों को भी चाहिए कि वो भूस्थानिक तकनीक का प्रयोग करें। इसमें भौगोलिक सूचना तंत्र एवं सुदूर संवेदन तकनीकें प्रमुख हैं जिससे जल संकट का सही पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। यह सही है कि सरकार इस समस्या के समाधान के लिए पर्याप्त वित्तीय सहायता उपलब्ध करा रही है, लेकिन जल प्रबंधन के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निजी क्षेत्र को भी शामिल करना आवश्यक है जिससे इन परियोजनाओं के लिए धन की कमी न हो।

औद्योगिक अपशिष्ट जल द्वारा जल संसाधनों में प्रदूषण

विभिन्न नदियों की हत्या की जा रही है, अगर तत्काल उपाय नहीं किए गए तो कई नदियों का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। हमें यह भली-भांति समझना होगा कि नदियों को प्रदूषण मुक्त करने का लक्ष्य केवल भारी-भरकम बजट आबंटित करने और पानी की तरह पैसा बहाने से हासिल नहीं होगा, बल्कि आज गंगा समेत सभी नदियों की दशा सुधारने के लिए गंभीर प्रयासों के साथ-साथ जन-जागरूकता पैदा करने की भी सख्त आवश्यकता है।

जल संरक्षण के लिए पर्यावरण संरक्षण जरूरी

जल संरक्षण के लिए पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता है। पर्यावरण बचेगा तभी जल बचेगा। जल संकट का एक बड़ा कारण पर्यावरण भी है। इसे इस उदाहरण से समझा जा सकता है। पर्यावरण के कारण हिमालय खतरे में है। सूर्य के बढ़ते तापमान के कारण 2030 तक हिमनदों की बर्फ काफी मात्रा में पिघल जाएगी। इस तरह से हम जल भी खो देंगे। पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें वानिकी को विनाश से बचाना होगा। हमें ऐसी विधियां और तकनीकें विकसित करनी होंगी जिससे खारे जल को मीठा और पीने योग्य बनाया जा सके। इसके लिए हमें विशेष रूप से अभिकल्पित किए गए जल संयंत्र लगाने होंगे। चेन्नई में यह प्रयोग काफी सफल रहा है जहां इस तरह से लगाए गए जल संयंत्र से हर दिन 100 मिलियन लीटर पानी पीने योग्य बनाया जाता है।

भारत जैसे विकासशील देशों में सिंचाई की 80% आवश्यकताएं भूजल से पूरी होती हैं, जिसके कारण भूजल संसाधन तेजी से समाप्त हो रहे हैं। मुफ्त बिजली और किसानों द्वारा जल के अकुशल उपयोग ने भूजल कमी की समस्या को और भी गंभीर बना दिया है। तेजी से हो रहे शहरीकरण के कारण देश में जल संकट की समस्या बढ़ती जा रही है। इमारतों, घरों और सीमेंट की सड़कों की मौजूदगी भी जानलेवा साबित हो रही है। मुंबई जैसे शहर में अगर अच्छी वर्षा भी होती है तो वर्षा जल उस इलाके में नहीं रुक पाता, क्योंकि जल को जमीन में रिसने नहीं दिया जाता। इसलिए शहरों के लिए आवश्यक जल बड़े पैमाने पर पड़ोसी गांवों और दूरस्थ स्थित नदियों और झीलों से लिया जाता है, जिससे उन इलाकों में जल की उपलब्धता खतरे में पड़ जाती है।

सीवेज के प्रदूषित जल से सतही एवं भूमिगत जल प्रदूषण में वृद्धि

बड़े शहरों से सीवेज एक बड़ी मात्रा में निकलता है जो मीठे जल के स्रोतों और समुद्री जल को प्रदूषित करता है। वर्तमान में, वैश्विक स्तर पर केवल 20% शहरी अपशिष्ट जल का उपचार किया जाता है। भारत में, यह आंकड़ा और भी कम है। जनसंख्या वृद्धि, औद्योगीकरण, तेजी से बढ़ते शहरीकरण, बढ़ती सिंचाई आवश्यकताओं और घरेलू जल उपयोग में वृद्धि ने जल की मांग को और बढ़ा दिया है। जैसे-जैसे भारत में शहरीकरण तेजी से बढ़ेगा जल की मांग भी तेजी से बढ़ेगी क्योंकि शहरी लोग ग्रामीण लोगों की तुलना में अधिक जल का उपयोग करते हैं।

महाराष्ट्र जल संकट के अभूतपूर्व स्तर का सामना कर रहा है। कई वर्षों के सूखे के बाद नदियों में जल उपलब्धता कम हो गई हैं, बांधों और जलाशयों में जल कम हो गया है और भूजल के अत्यधिक दोहन ने जल की दीर्घकालिक उपलब्धता को लेकर चिंता बढ़ा दी है। एक ओर उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश जैसे जल अधिशेष वाले राज्य हैं, तो दूसरी ओर महाराष्ट्र (विदर्भ, बीड), कर्नाटक, तमिलनाडु, राजस्थान और गुजरात जैसे जल की कमी वाले राज्य हैं। इसके अलावा, पंजाब, हरियाणा जैसे कुछ राज्य ऐसे भी है, जिन्हें जल के क्षेत्र में समृद्ध माना जाता है, लेकिन उनकी अपनी समस्याएं हैं।

भारत में जल की कमी नहीं है, लेकिन जल संसाधन विकास परियोजनाओं की घोर उपेक्षा और प्रबोधन की कमी के कारण देश के कई क्षेत्रों को समय-समय पर जल की कमी का सामना करना पड़ता है। इसलिए भविष्य की आर्थिक वृद्धि और विकास के साथ-साथ मानव जीवन के निर्वाह के लिए जल की मांग और उपलब्ध आपूर्ति में संतुलन बनाना आवश्यक है।

ऊष्माद्वीप का प्रभाव

बढ़ती गर्मी, ऊंची इमारतें, अन्य निर्माण कार्य और वाहनों की संख्या में अनियंत्रित वृद्धि ने शहरों में 'ऊष्माद्वीप प्रभाव' को बढ़ा दिया है। 'ऊष्मा द्वीप प्रभाव' वह स्थिति है जब शहरों का तापमान आसपास के ग्रामीण इलाकों से अधिक हो जाता है। इससे जल संकट भी बढ़ता है क्योंकि जल के उत्पादन के लिए ठंडे तापमान की जरूरत होती है, लेकिन जब भीषण गर्मी पड़ती है उस समय करीब 60 करोड़ भारतीय जल संकट से जूझ रहे होते हैं। हर साल करीब 2 लाख लोग जल की कमी के कारण मर जाते हैं। स्थिति और भी खराब होने की आशंका है क्योंकि 2050 तक जल की मांग इसकी आपूर्ति से अधिक हो जाएगी।

जमीनी स्तर पर जल प्रबंधन

जल की निरंतर आपूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि जमीनी स्तर पर जल प्रबंधन को लेकर वास्तविक कार्य हो, लेकिन भारत में अलग-अलग संस्थाओं के बीच समन्वय की कमी से इस क्षेत्र में कार्य करने में बहुत समस्याएं आती हैं। भारत में जिस तरह जल संकट बढ़ रहा है उसका समाधान ढूंढने के लिए राज्य सरकारों को भी चाहिए कि वो भूस्थानिक तकनीक का प्रयोग करें। इसमें भौगोलिक सूचना तंत्र एवं सुदूर संवेदन तकनीकें प्रमुख हैं जिससे जल संकट का सही पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। यह सही है कि सरकार इस समस्या के समाधान के लिए पर्याप्त वित्तीय सहायता उपलब्ध करा रही है, लेकिन जल प्रबंधन के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निजी क्षेत्र को भी शामिल करना आवश्यक है जिससे इन परियोजनाओं के लिए धन की कमी न हो।

कई बार ऐसी कंपनियों को ठेका दे दिया जाता है जिनके पास ऐसे कार्य करने के लिए संसाधन नहीं होते। कई मामलों में फीस इतनी कम रखी जाती है कि परियोजना की लागत भी नहीं निकल पाती। योजना को चलाने और उसके रखरखाव की लागत निकालना मुश्किल हो जाता है। ऐसे में जल प्रबंधन के कार्य में निजी क्षेत्र को आकर्षित करने के लिए सरकार को ऐसी पिछली परियोजनाओं की सफलता और असफलता का मूल्यांकन करना चाहिए। सरकार को जल स्तर सुधारने और पुनर्चक्रण के कार्य में निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करना चाहिए। ऐसा करके हम शहरों की जल आपूर्ति व्यवस्था को बेहतर बना पाएंगे।

संपर्क करें:

विवेक दत्त पाण्डेय

फ्लेट न. 19, चंडीका धाम कॉलोनी,
राजश्री गैस गोदाम रोड़,
शिवपुर, वाराणसी -221 003